JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तराखण्ड में सहकारी समितियों की प्रगति–एक अध्ययन (उधम सिंह नगर जनपद के सन्दर्भ में)

शोधार्थी–अशोक कुमार
वाणिज्य विभाग– सरदार भगत सिंह राज. स्ना. महा., रूद्रपुर
ई. मेल. आई. डी.–ोवाानउंततनकतंचनत/हउंपसण्बवउ

सारांश–

किसान दे"ा की जीवन रेखा हैं और किसी भी दे"ा का विकास उसके कृषि क्षेत्र के विकास के बिना अधूरा है। दे"ा की खाद्य सुरक्षा को सतत आधार पर सुनि"चत करने का श्रेय हमारे किसानों को ही जाता है। आज स्थिति यह है कि भारत न केवल बहुत से कृषि उत्पादों में आत्म निर्भर व आत्मसम्पन्न है वरन् बहुत से उत्पादों का निर्यातक भी है। इन सत्यों के साथ यह भी सच है कि किसान अपने उत्पादों का लाभकारी मूल्य नहीं पाते हैं। अतः सरकार का यह मानना है कि कृषि क्षेत्र में इस तरह का चहुमुखी विकास किया जाये कि अन्न एवं कृषि उत्पादों के भंडार के साथ–साथ किसान की जेब भी भरे व् उनकी आय भी बढ़े। इसी आ"ाय के साथ उत्तराखण्ड में भी सहकारी समितियों की स्थापना की गयी ताकि उत्तराखण्ड के किसानों कि आय में वृद्धि हो सके। उत्तराखण्ड राज्य सरकार द्वारा उत्तराखण्ड के ग्रामीण विकास के लिये विभिन्न प्रकार की योजनायें संचालित एवं क्रियान्वित की गयी हैं एवं की जा रही हैं जिनमें सहकारी समिति भी एक माध्यम हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीय समंको के विवेचन द्वारा उत्तराखण्ड में संचालित विभिन्न सहकारी समितियों की प्रगति का अध्ययन उधम सिंह नगर जनपद के सन्दर्भ में किया गया है तथा यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि सहकारी समितियों की प्रगति हो पायी है या नहीं।

प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम सहकारिता का संक्षिप्त परिचय, सहकारी समितियों का परिचय, उधम सिंह नगर जनपद का संक्षिप्त परिचय, शोध का उद्दे"य, शोध परिकल्पना एवं शोध विधि को द"ार्याया गया है तत्प"चात उधम सिंह नगर में संचालित न्यादर्श सहकारी समितियों की प्रगति सम्बंधी द्वितीयक समंको का वि"लेषण किया गया है एवं यह निष्कर्ष ज्ञात किया गया है कि उधम सिंह नगर में विभिन्न सहकारी समितियों की प्रगति हुई है अर्थात सहकारी समितियों की प्रगति उन्नत रही है।

सहकारिता–

सहकारिता का अर्थ निर्बल, अ"ाक्त और निर्धन लोगों के परस्पर सहयोग से है ताकि वे उन लाभों को प्राप्त कर सके जो शक्ति"ाली और धनी लोगों को उपलब्ध हैं। सहकारिता में एक सब के लिये और सब एक के लिय की भावना को वि"ैष महत्व दिया जाता है।

सहकारी समिति–

सहकारी समिति एक ऐसी स्वेच्छिक संस्था है जिसमें कोई भी सम्मिलित हो सकता है। समिति के सभी सदस्यों के समान अधिकार और उत्तरदायित्व होते हैं, समिति का उद्दे''य पारस्परिक हित और लाभ होता है। वर्तमान में सहकारी समितियाँ ग्रामीणों के आर्थिक विकास का एक स''क्त माध्यम बन चुकी हैं। सहकारी समिति के माध्यम से उन्हें रोजगार एवं ऋण उपलब्ध कराकर सुदृढ़ जीवन यापन करने योग्य बनाने का प्रयास किया जाता है।

उधम सिंह नगर का संक्षिप्त परिचय–

उधम सिंह नगर भारतीय राज्य उत्तराखण्ड का एक जनपद है। जनपद का मुख्यालय रूद्रपुर है। इस जनपद के का''ीपुर, खटीमा, सितारगंज, किच्छा, जसपुर, बाजपुर, गदरपुर, रूद्रपुर और नानकमत्ता नाम की 9 तहसीलें हैं। उधम सिंह नगर पहले नैनीताल जनपद में था परन्तु अक्टूबर 1995 में इसे अलग जनपद बना दिया गया। इस जनपद का नाम स्वर्गीय उधम सिंह के नाम पर रखा गया। उधम सिंह स्वतंत्रता सेनानी थे। यहाँ के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल बनबसा, नानकमत्ता, रूद्रपुर हैं, प्रसिद्ध मंदिर चैतीमन्दिर, नानकमत्ता तथा अटरिया मंदिर हैं, प्रसिद्ध ताल शारदा सागर, गिरीताल, नानकसागर एवं द्रोणासागर हैं। उधम सिंह नगर की सीमा रेखायें में पूर्व में नेपाल, प''चम से दक्षिण तक उत्तर प्रदे''ा, उत्तर में नैनीताल व चम्पावत हैं।

शोध उद्देश्य–

उत्तराखण्ड में सहकारी समितियों की प्रगति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना–

परिकल्पना की गयी है उत्तराखण्ड में सहकारी समितियों की प्रगति अनुकूल है।

शोध प्रविधि–

उत्तराखण्ड में सहकारी समितियों की प्रगति का अध्ययन करने हेतु उधम सिंह नगर जनपद की बुनकरों की औद्योगिक सहकारी समितियों तथा प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों को न्याद''र्ा के रूप मे शामिल किया गया। समंक वि''लेषण हेतु द्वितीयक समंको को उत्तराखण्ड सांख्यिकीय डायरी तथा उधम सिंह नगर सांख्यिकीय डायरी से प्राप्त किया गया। द्वितीयक समंको के वि''लेषण हेतु प्रति''ात विधि का प्रयोग किया गया तथा समंको के प्रर्द''ान हेतु तालिकाओं एवं दण्डचित्रों को प्रयोग किया गया। सहकारी समितियों की प्रगति का अध्ययन करने हेतु समिति संख्या, समिति में सदस्यों की संख्या, कार्य''ील पूँजी, अ''ा पूँजी, जमा पूँजी, विपणित मूल्य तथा वस्त्र उत्पादन आदि चरों का प्रयोग किया।

समंक विश्लेषण–

परिकल्पना की सत्यता सिद्ध करने हेतु एकत्रित किये गये द्वितीयक समंको का समंक वि''लेषण इस शीर्षक में किया गया है जो अग्रलिखित है–

तालिका संख्या–1

बुनकरों की प्रारम्भिक औद्योगिक सहकारी समितियों की प्रगति का विवरण

(31 मार्च की स्थिति)

वर्ष	संख्या		सदस्य संख्या		कार्यशील पूंजी		वस्त्र उत्पादन		विपणित उत्पादों का मूल्य	
	संख्या	:	संख्या	:	(,000 रू0 में)	:	(,000 मी0 में)	:	(,000 रू0 में)	:
2017–18	55	23.9	5123	33.2	7657.44	24.6	2190.38	7.9	85862.77	33.1
2018–19	85	36.9	5115	33.0	7557	24.2	1971	7.2	78840	30.4
2019–20	90	39.2	5216	33.8	15898	51.2	23562	84.9	94608	36.5
योग	230	100	15454	100	31,112.44	100	27723.38	100	259310.77	100

स्त्रोत–उधम सिंह नगर सांख्यिकीय डायरी

तालिका संख्या 1 से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट हैं–

(1)बुनकरों की प्रारम्भिक औद्योगिक सहकारी समितियों की संख्या वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में क्रम''ः 55, 85 तथा 90 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 23.9ः, 36.9ः तथा 39.2ः है। जिससे स्पष्ट है बुनकर सहकारी समितियों की संख्या में प्रति वर्ष वृद्धि हुयी है।

(2)वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में बुनकर औद्योगिक सहकारी समिति में सदस्यों की संख्या क्रम''ः 5123, 5115, 5216 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 33.2ः, 33.0ः तथा 33.8ः है। स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में सदस्य संख्या में कमी आयी परन्तु वर्ष 2019–20 में सदस्यों संख्या में पुनः वृद्धि हुयी।

(3)स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में बुनकर औद्योगिक सहकारी समिति में कार्य''ील पूँजी क्रम''ः 7657.44 हजार रू0, 7557 हजार रू0 तथा 15898 हजार रू0 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 24.6ः, 24.2ः तथा 51.2ः है। स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में कार्य''ील पूँजी संख्या कमी आयी परन्तु वर्ष 2019–20 में कार्य''ील पूँजी में पुनः वृद्धि हुयी।

(4)स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में बुनकर औद्योगिक सहकारी समिति में क्रम''ः 2190.38 हजार मी0, 1971 हजार मी0 तथा 23562 हजार मी0 वस्त्र का उत्पादन हुआ जिनका प्रति''ात क्रम''ः 7.9ः, 7.2ः तथा 84.9ः है। स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में वस्त्र के उत्पादन में कमी आयी परन्तु वर्ष 2019–20 में वस्त्र उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हंई अर्थात वस्त्र उत्पादन 84.9 प्रति''ात बढ़ा।

(5)वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में बुनकर औद्योगिक सहकारी समितियों द्वारा विपणित उत्पादों का मूल्य क्रम''ः 85862.77 हजार रू0, 78840 हजार रू0 तथा 94608 हजार रू0 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 33.1ः, 30.4ः तथा 36.5ः है। स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में समिति द्वारा विपणित उत्पादों के मूल्यों में कमी आयी परन्तु वर्ष 2019–20 में विपणित उत्पादों के मूल्यों में पुनः वृद्धि हंई।

बुनकरों की औद्योगिक सहकारी समितियों की प्रगति को अग्र बहुदण्ड चित्रों द्वारा द’र्ाया गया है –

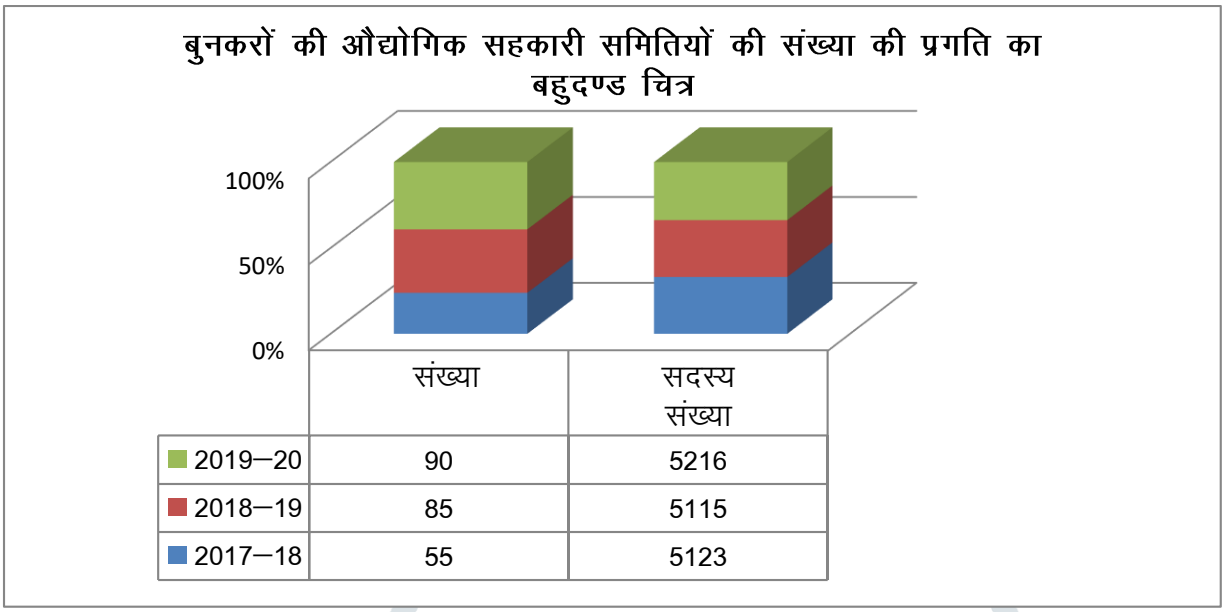

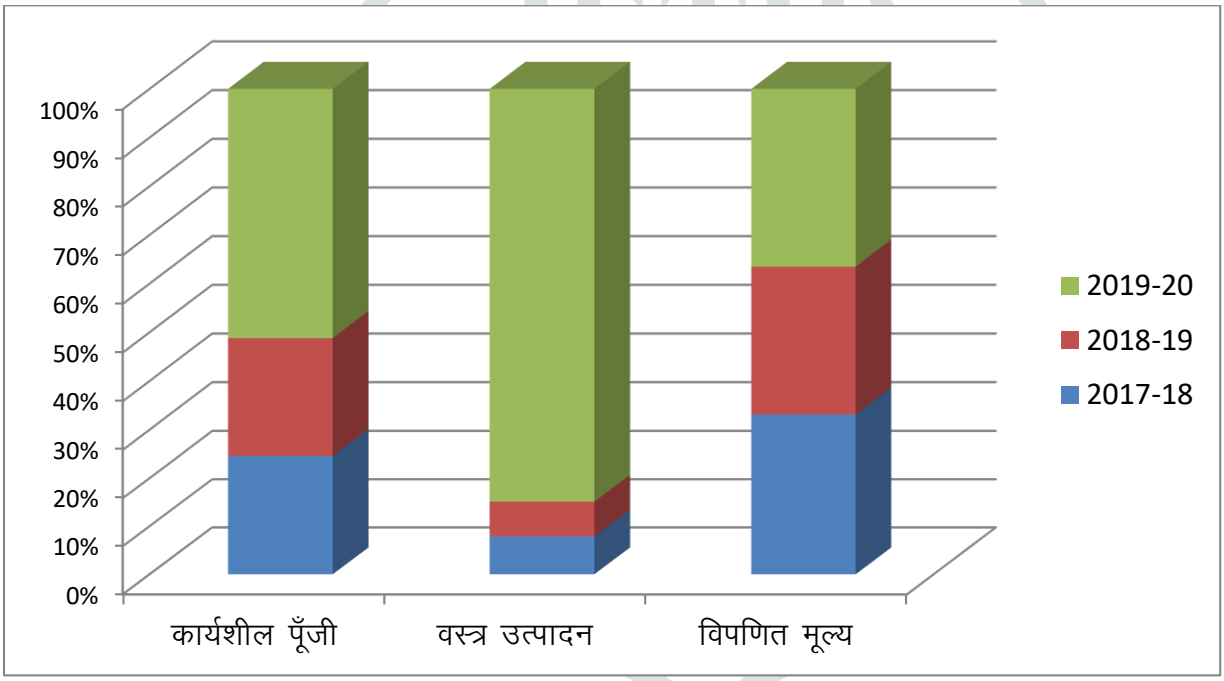

तालिका संख्या–2

प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों की प्रगति का विवरण

(31 मार्च की स्थिति)

वर्ष	संख्या		सदस्य संख्या		अंश पूँजी		कार्यशील पूँजी		जमा धनराशि	
	संख्या	:	संख्या	:	(,000 रू0 में)	:	(,000 रू0 में)	:	(,000 रू0 में)	:
2017–18	35	33.3	114872	32.2	355202	32.1	5428142	32.4	1265245	35.0
2018–19	35	33.3	119464	33.6	371142	33.5	5528332	32.9	1170595	32.3
2019–20	35	33.4	121381	34.2	379636	34.4	5811753	34.7	1178235	32.7
योग	105	100	355717	100	1105980	100	16768227	100	3614075	100

स्त्रोत–उधम सिंह नगर सांख्यिकीय डायरी

तालिका संख्या 2 से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट हैं–

(1)प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों की संख्या वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में एकसमान अर्थात 35 है जिससे स्पष्ट है बुनकर सहकारी समितियों की संख्या में प्रति वर्ष वृद्धि नहीं हुयी है।

(2)वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में प्रारम्भिक कृष ऋण सहकारी समिति में सदस्यों की संख्या क्रम''ः 1,14,872, 1,19,464 तथा 1,21,381 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 33.2ः, 33.6ः तथा 34.2ः है। स्पष्ट है कि वर्ष समिति में सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुयी है।

(3)स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समिति में अं''ा पूँजी क्रम''ः 355202 हजार रू0, 371142 हजार रू0 तथा 379636 हजार रू0 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 32.1ः, 33.5ः तथा 34.4ः है। स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ष समिति की हिस्सा पूँजी में वृद्धि हुयी है परन्तु वर्ष 2019–20 में अं''ा पूँजी में कमी आयी है।

(4)स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समिति में कार्य''ील पूँजी क्रम''ः 5428142 हजार रू0, 5528332 हजार रू0 तथा 5811753 हजार रू0 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 32.4ः, 33.9ः तथा 34.7ः है। स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ष समिति की कार्य''ील पूँजी में वृद्धि हुयी है।

(5)स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18, 2018–19 तथा 2019–20 में प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समिति में जमा पूँजी क्रम''ः 1265245 हजार रू0, 1170595 हजार रू0 तथा 1178235 हजार रू0 है जिनका प्रति''ात क्रम''ः 35.0ः, 32.3ः तथा 32.7ः है। स्पष्ट है कि वर्ष 2017–18 की तुलना में समिति की जमा पूँजी में कमी आयी तथा 2019–20 में समिति की जमा पूँजी में वृद्धि हुयी है।

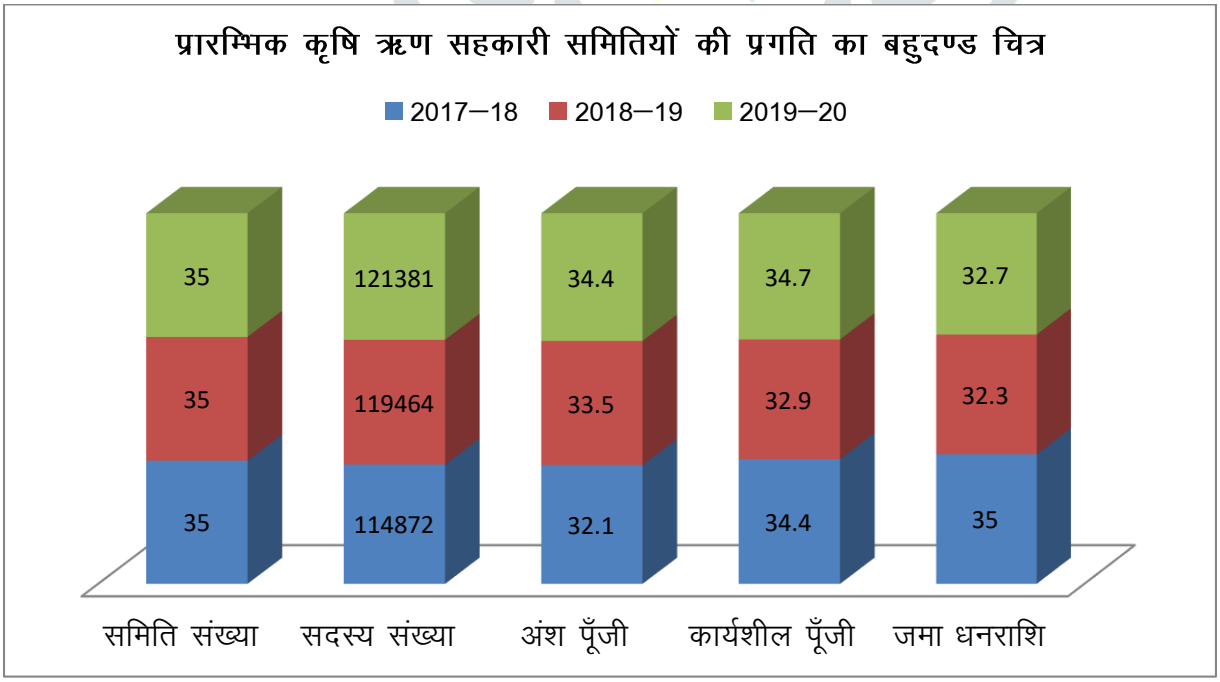

निष्कर्ष–

उत्तराखण्ड में सहकारी समितियों की प्रगति का अध्ययन करने हेतु जिन चरों को ध्यान में रखकर द्वितीयक आँकड़ो का विलेषण किया गया, उनके आधार पर ज्ञात निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

(1)बुनकरों की औद्योगिक सहकारी समिति की प्रगति उन्नत रही है क्योंकि वर्ष 2018–19 की तुलना में वर्ष 2019–20 में समिति की संख्या में सतत् वृद्धि हुयी है। इसी प्रकार वर्ष 2018–19 की तुलना में वर्ष 2019–20 में समिति में सदस्यों की संख्या, कार्यषील पूँजी, वस्त्र उत्पादन, समिति द्वारा विपणित किये गये मूल्य में भी वृद्धि हुयी है जिनका प्रतिषत क्रमषः 33.8:, 51.2:, 84.9: तथा 36.5: है।

(2)प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों की संख्या लगभग प्रतिवर्ष समान रही है परन्तु समिति में सदस्यों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हुई है जिनका प्रतिषत क्रमषः 32.2:, 33.6: तथा 34.2: है।

(3)वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 एवं 2019–20 में समिति की अंषपूँजी में वृद्धि अंकित की गयी है जिनका प्रतिषत क्रमषः 32.1:, 33.5: तथा 34.4: है।

(4)वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 एवं 2019–20 में समिति की कार्यषील पूँजी में वृद्धि अंकित की गयी है जिनका प्रतिषत क्रमषः 32.4:, 32.9: तथा 34.7: है परन्तु समिति की जमा पूँजी में वर्ष 2017–18 की तुलना में वर्ष 2018–19 में जमा पूँजी में कमी अंकित की गयी लेकिन पुनः समिति की जमा पूँजी में वर्ष 2018–19 की तुलना में वर्ष 2019–20 में जमा पूँजी में वृद्धि अंकित की गयी जिनका प्रतिषत क्रमषः 32.3: तथा 32.7: है।

अतः उपरोक्त निष्कर्षो के आधार पर यह ज्ञात है कि षोध उद्देष्य को लेकर जो परिकल्पना की गयी थी वह सत्य सिद्ध होती है अर्थात उत्तराखण्ड में चयनित सहकारी समितियों की प्रगति उन्नत रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- डा. के. एल. गुप्ता, डा. रविकान्त अग्रवाल एवं प्रवीन जैन, अर्थ''ास्त्र की आधारभूत परिमाणात्मक विधियाँ, निरूपम साहित्य सदन।
- डा. जय प्रकाश मिश्र, कृषि अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
- डी. बी. पी गुप्ता, सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार, रमेश बुक डिपो।
- डा. बी. एस माथुर, भारत मे सहकारिता, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
- डाँ. चतुर्भुत ममोरिया एवं डाँ. एस. सी. जैन, भारतीय अर्थव्यस्था, साहित्य भवन पब्लिके''ान।
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in
- https://ukcooperative.in
- https://www.studyfry.com>major-s----
- Uttarahkhand statistical dairy.
- Udham singh nagar statistical dairy.
- Usnagar.nic.in
- https://des.uk.gov.in>listing>16....
- https://m.wikipedia.org>wiki